International Journal of Applied Research 2020; 6(10): 561-562

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2020; 6(10): 561-562
www.allresearchjournal.com
Received: 28-08-2020
Accepted: 29-09-2020

डॉ. अमरदीप कुमार चौधरी
अतिथि व्याख्याता, संस्कृत विभाग एस० एस० भी० महाविद्यालय, कहलगॉव, ति०माँ. भागलपुर वि.वि. भागलपुर, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ. अमरदीप कुमार चौधरी
अतिथि व्याख्याता, संस्कृत विभाग एस० एस० भी० महाविद्यालय, कहलगॉव, ति०माँ. भागलपुर वि.वि. भागलपुर, बिहार, भारत

स्वप्नवासवदत्तम् की भाषा शैली में स्वाभाविक प्रवाह

डॉ. अमरदीप कुमार चौधरी

प्रस्तावना

स्वप्नवासवदत्तम् की शैली अत्यन्त सरल है। ये लम्बे समस्त पदों को प्रयोग नहीं करते। इनके वाक्य अति लधु भी होते हैं। इनकी भाषा में स्वाभाविक प्रवाह है। इनकी भाषा को देखने से ऐसा प्रतीत होता है कि इनके समय में संस्कृत बोलचाल की भाषा रही हो। जटिल भाषा नाट्य साहित्य के लिए सर्वथा अनुपयुक्त प्रतीत होती है। इनकी भाषा नाट्य साहित्य के लिए सर्वथा उपयुक्त और अनुकूल है। धटना चक्र और रस के अनुसार इनकी शैली बदलती भी रहती है। भाषा में स्वल्प शब्द होने पर भी भावाभिव्यक्ति में त्रुटि नहीं होती। भाषा अनलंकृत होने पर भी कटाक्षों से भरी है। अतः हठात् हृदय को आकृष्ट करती है। इनकी भाषा मुहावरेदार तथा कहावत वहुल एवं प्रभावोत्पादक है –

एवम निर्ज्ञातानि दैवतान्यवधूयन्ते।
अविचार्यक्रमं न करिष्यति।
कालक्रमेण जगतः.....चक्रारपङिक्तरिव
गच्छति भाग्यपङिक्तः। [1]
तथा परिश्रमं परिरवेदं नोत्पादयति यथायं परिभवः।
तपोवनानि नाम अतिथि जनस्य स्वगेहम् । [2]
तस्मिन् सर्वमधीनं हि यत्राधीनो नराधिपः । [3]
न परूषमाश्रमवासिषु प्रयोज्यम् । [4]
न हि सिद्धवाक्यान्युत्क्रम्य गच्छति विधिः सुपरीक्षितानि। [5]
प्रद्वेषो बहुमानो वा संकल्पादुपजायते । [6]
सर्वजनसाधारणमाश्रमपदं नाम । [7]
सविज्ञानमस्य दर्शनम् । [8]
दुःखं न्यासस्य रक्षणम् । [9]
सर्वजनमनोऽभिरामं खलु सौभाग्यं नाम । [10]
आगमप्रधानानि ..... महापुरूषहृदयानि । [11]
अकरूणाः खल्वीश्वराः । [12]
अनतिक्रमणीयो हि विधिः । [13]
अयुक्तं परपुरूषसंकीर्त्तनं श्रोतुम् । [14]
धन्या खलु चक्रवाकवधूर्यान्योऽन्यविरहिता न जीवति। [15]
अज्ञातवासोऽपि बहुगुणः सम्पद्यते । [16]
अस्य स्निग्धस्य वर्णस्य विपत्तिर्दारूणा कथम् । [17]
कातरा येऽप्यशक्ता वा नोत्साहस्तेषु जायते।
प्रायेग हि नरेन्द्रश्रीः सोत्साहैरेव भुज्यते। [18]
गुणानां वा विशालानां । [19]
दत्तं वेतनं परिरवेदस्य । [20]
यात्रात्वेषा ..... यति बद्धिः प्रसादम् । [21]
रज्जुच्छेदे के धटं वारयन्ति । [22]
कः कं शक्तो रक्षितुं मृत्युकाले । [23]
एवं लोकस्तुल्य ..... छिद्यते रूहयते च । [24]
सत्कारो हि नाम सत्यकारेण प्रतीष्टः प्रीतिमुत्पादयति। [25]
सदाक्षिण्या जनस्य परिजनोऽपि सदाक्षिण्य एव भवति। [26]

स्त्रीस्वभावस्तु कातरः । [27]
सुखं नामयपरिभूतमकल्यवर्तं च। [28]
प्राणी प्राप्यरूजा..... शीघ्रं स्वयं मुञ्चति। [29]
साक्षिमन्न्यासो निर्यातयितत्यः । [30]
अकरूणाः खल्वीश्वरा मे । [31]
परस्परगता लोके दृश्यते तुल्यरूपता । [32]

इन उक्तियों से भाषा में प्रभावोत्पादकता बढ गई है। उक्ति प्रत्युक्तियों और धटनाचक्र नाट्यसाहित्य का प्रधान अंग है। इससे कथानक आगे बढ़ता है। इसमें दोनों अंगो का सन्तुलन है। इनकी उक्ति प्रत्युक्तियाँ सीधी, स्वाभाविक और पभावशाली है। छन्दों एवं अलंकारों का स्वाभाविक प्रयोग भी हुआ है।
गुणों की दृष्टि से इनकी भाषा प्रसादगुण युक्त है। रीति तो
वैदर्भी ही है। गौड़ी का सर्वथा अभाव है। वृत्ति में कैशिकी वृत्ति है।

संदर्भ ग्रंथ

1. प्रतिज्ञा० 1.4
2. प्रतिज्ञा० पृ० 8
3. प्रतिज्ञा० पृ० 19
4. प्रतिज्ञा० 1.15
5. प्रतिज्ञा० 1.5
6. प्रतिज्ञा० 1.11
7. प्रतिज्ञा० 1.7
8. प्रतिज्ञा० पृ० 38
9. प्रतिज्ञा० पृ० 12
10. प्रतिज्ञा० प1.10
11. प्रतिज्ञा० पृ० 74
12. स्वप्न० पृ० 78
13. स्वप्न० पृ० 87
14. स्वप्न० पृ० 148
15. स्वप्न० पृ० 90
16. स्वप्न० पृ० 84
17. स्वप्न० ० पृ० 140
18. स्वप्न० 6.13
19. स्वप्न० 6.7
20. स्वप्न० 4.9
21. स्वप्न० 140
22. स्वप्न० 4.6
23. स्वप्न० 6.10
24. स्वप्न० 6.10
25. स्वप्न० 6.10
26. स्वप्न० पृ० 158
27. स्वप्न० पृ० 154
28. स्वप्न० 4.8
29. स्वप्न० पृ० 99
30. स्वप्न० 5.4
31. स्वप्न० पृ० 251
32. स्वप्न० पृ० 185